मोहयाल मित्र

संपादकीय

सदा कर्मशील श्री ओ.पी. मोहन

श्री ओ.पी. मोहन 'जनरल मोहयाल सभा' के साथ विभिन्न रूपों से जुड़े रहे। लंबी समाज–सेवा करते हुए मैंने उन्हें सदा कार्यों में निमग्न देखा है। विनम्रता, कार्य के प्रति समर्पण, छोटों–बड़ों को सम्मान देना, सबके साथ मन से मिलना, आडंबर रहित स्वभाव, ईश्वर के प्रति सच्ची आस्था आदि समस्त गुणों की खान हैं श्री ओ.पी. मोहन।

वे जी.एम.एस. के साथ लगभग 35 वर्षों तक सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं। ईश्वर ने उन्हें दीर्घायु दी है जिसका उन्होंने सद्पयोग किया है। वे 95 वर्ष के हो गए हैं पर अभी भी जीवंतता के साथ कार्य करते हैं। समाज–सेवा प्रभु सेवा है, इस कथन को उन्होंने सत्य सिद्ध किया है।

संस्थाओं के साथ जुड़े व्यक्ति अपने–अपने कार्यों–उत्तरदायित्वों का पालन करके चले जाते हैं। जनरल मोहयाल सभा के साथ भी अनेक व्यक्ति जुड़े, पदाधिकारी बने, प्रबंधक समिति के सदस्य बने और चले गए। उन सबके योगदान से जनरल मोहयाल सभा ने आज की ऊँचाइयों को प्राप्त किया है। इसके साथ जो भी जुड़े सबने निःस्वार्थ भाव से, सेवा की भावना से कार्य किए हैं। श्री ओ.पी. मोहन का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

प्रभु उन्हें स्वस्थ रखें, उनमें सेवा–भाव बनाए रखें, उनकी कर्मठता बनी रहे, उनका मार्ग दर्शन हमें मिलता रहे, उनके अनुभवों का लाभ युवाओं को मिलता रहे– हमारी यही शुभकामना है। उनकी आजीवन संगिनी श्रीमती शंकुतला मोहन जी भी स्वस्थ रहकर उनके कार्यों में योगदान करती रहें!

तन–मन–धन से समाज सेवा करने वाले श्री ओ.पी. मोहन हमारे लिए प्रकाश–स्तंभ हैं, जिनका स्नेह भरा प्रकाश सबका मार्ग दर्शन करता रहेगा।

संपादक (हिंदी)

प्रधान संपादक के डेस्क से

अलविदा

कार्य करने के लिए हाथ, ईश्वर के लिए हृदय,
किसी के प्रति दुर्भावना नहीं, सबके प्रति प्रेम।

यह सबको विदा कहने का समय है, अलविदा! अपने प्रिय पाठकों को भगवान आशीर्वाद दें, जिनके लिए मैं गत 25 वर्षों से लिखता आ रहा हूँ। 95 वर्ष की उम्र में आपकी सेवा करने से मुझे कोई रोक नहीं सकता था परंतु युवा पीढ़ी को आगे आकर मोहयाल मित्र के प्रकाशन का उत्तरदायित्व लेना चाहिए था, इसलिए मैंने यह निर्णय लिया है हमारे पूर्वजों द्वारा किए सद्प्रयास, जो सन् 1891 से इसके नए रूप प्रदान करते रहे थे। श्री बरकत राम वैद, चौधरी रामभज दत्ता, मेहता ढेरामल दत्ता, चौधरी दीनानाथ दत्त, मेहता बिशंभर दास छिब्बर, श्री जी.एस. दत्ता (ज़िया मोहयाली) और मुझसे पहले के संपादक स्कै. लीडर जे.एस. भीमवाल–इनके कुशल मार्गदर्शन से पत्रिका को सफलता मिली है। पाठकों का प्रेम, अपनत्व और निरंतर समर्थन से मोहयाल मित्र ने इस ऊँचाई को छुआ है। 'लिमका बुक आफ़ रिकार्ड' में सन् 2008 में सन् 1891 से लगातार प्रकाशित होने वाली सबसे पुरानी पत्रिका के रूप में इसका उल्लेख हुआ है।

मेरे लिए यह उपलब्धि के समान है कि मैंने मोहयाल मित्र द्वारा सभी प्रकार की सूचनाएँ और जानकारियाँ आप तक पहुँचाई हैं। हो सकता है कि मैं अपने कुछ मित्रों की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा हूँ, और अनजाने में मैंने उन्हें कष्ट पहुँचाया हो। परंतु समस्त पाठकों ने मोहयाल मित्र की टीम की प्रशंसा की है।

अपने सबसे पहले संपादकीय 'मोहयाल मित्र कॉलिंग' (अगस्त 1989) में मैंने लिखा था कि मैं जनरल मोहयाल सभा का

विनम्र सिपाही हूँ न कि संपादक हूँ। मैंने अपनी ओर से अपने उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। मैं कैप्टन डोभाल का विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ जो प्रकाशन–सामग्री मुझ तक पहुँचाते रहे, श्री एस.एन. दत्ता (दत्ता प्रेस) का पत्रिका समय पर प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद!

मैं अपने इस पत्र का समापन मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली के प्रति आभार प्रकट करके करता हूँ, जिन्होंने 35 वर्ष की दीर्घ अवधि तक विभिन्न रूपों में इस संगठन की सेवा करने में मेरा समर्थन और मार्गदर्शन किया।

मैं अपनी इस लंबी यात्रा की स्मृतियों को सदा हृदय में संजोए रखूँगा, आपने जो प्रेम और आदर दिया है उसके लिए आपका आभारी हूँ।

खुश रहना कौम के प्यारो, अब हम तो सफर करते हैं।

जय मोहयाल!

(ओ.पी. मोहन)

यमुनानगर के गौरव छिब्बर को हरियाणा के राज्यपाल से मिला अवार्ड

यमुनानगर के ग्रीन पार्क कालोनी में रहने वाले वरिष्ठ पत्रकार सुरेन्द्र मेहता छिब्बर के सुपुत्र गौरव मेहता को हरियाणा के राज्यपाल महामहिम कप्तान सिंह सोलंकी ने ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। गौरव छिब्बर ने जगाधरी से सेक्रेड हार्ट कान्वेंट स्कूल 12वीं में मैथमेटिक्स व फिजिक्स में उच्चतम अंक प्राप्त किए। गौरव छिब्बर को स्कूल के स्वर्णजयंती समारोह में राज्यपाल ने सम्मानित किया।

सतपाल बाली, *सचिव, जगाधरी वर्कशाप मोहयाल सभा*

बधाई

लाविन वैद पुत्री श्रीमती स्मृति मेहता और श्री कुलभूषण मेहता के दूसरे जन्मदिन के अवसर पर उनकी दादी जी श्रीमती कुसुम मेहता म.न. 316, वार्ड 18, यमुनानगर, हरियाणा मो. 9896919272 ने जीएमएस को 151 रुपए दान दिए है।

जन्मदिन मुस्कान बाली

मुस्कान बाली पुत्री श्रीमती मीनाक्षी बाली और श्री अशोक बाली (वकील) जो जी.एम.एस. के आजीवन सदस्य हैं। मुस्कान के जन्मदिन के अवसर पर उनके दादाजी श्री अविनाश चन्द्र बाली ने एक सौ एक रुपए जनरल मोहयाल सभा को भेंट किए हैं।*–बी–6–1353, मार्डन कॉलोनी, जगाधरी वर्कशाप, मो. 9031140166*

शहीद मेजर नितिन बाली की पुण्य-तिथि

दिनांक 27 अक्टूबर 2015 को शहीद मेजर नितिन बाली सेना मैडल (वीरता) की 17वीं पुण्यतिथि महाराजा अजीत सिंह मैमोरियल ट्रस्ट लाडवा, कुरूक्षेत्र द्वारा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के संयोजन से विश्वविद्यालय के विवेकानन्द हॉल भावनात्मक रूप से बड़े स्तर पर मनाई गई। इसमें हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़ के राज्यपाल महामहिम प्रो. कप्तान सिंह मुख्य अतिथि रहे। अन्तराष्ट्रीय संस्था 'सरबत दा भला' के चेयरमैन व संस्थापक सरदार एस.पी. ओबराय (दुबई) व शहीद भगत सिंह के भतीजे श्री अभय सिंह ने भी नितिन को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। गॉड ऑफ आनर के पश्चात सभी के द्वारा पुष्प चक्र चढ़ाए गए। राज्यपाल साहब ने नितिन की शहादत को भीवी पीढ़ी के लिए प्रेरणा और एक मिसाल बताया। उन्होंने इस नवयुवक के बलिदान को महर्षि दधीची के समकक्ष पहुँचा दिया, जिन्होंने अपनी हड्डियों से बज्रास्त के लिए उन्हें दान कर दिया। उन्होंने कहा कि अपनी इकलौती सन्तान को देश पर न्यौछावर कर बाली दम्पत्ति ने भी देश के लिए इतना बड़ा बलिदान दिया और गर्व से बेटे के नाम पर समाज के लिए सब कुछ त्याग कर वे एक उदाहरण बन गए हैं। नगर प्रशासन, व अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं से करीब चार सौ लोगों ने इसमें भाग लिया। प्रत्येक नितिन को एक महान शहीद बताया, जिसने स्वयं अपने प्राण हंसते–हंसते देश पर न्यौछावर कर दिए।

महामहिम राज्यपाल ने नितिन के माता–पिता के समक्ष नत्मस्तक होकर डॉ. एस.एस. बाली एवं डॉ. आदर्श बाली को 'सर्वश्रेष्ठ माता–पिता' की ट्राफी और शॉल देकर सम्मानित किया। वह स्वंय स्टेज से उतरकर दोनों के पास भावुक होकर आए। सभी समाचार पत्रों ने इस समारोह को स्थान दिया। डॉ. आदर्श बाली के संबोधन ने सभागार को भावुकता से भर दिया।

संतोष वैद (मेहता), *प्रधान मोहयाल सभा कुरूक्षेत्र*

12वाँ प्रतिभाशाली मोहयाल विद्यार्थी सम्मान 2015

मुख्य-अतिथि एवं पुरस्कार-वितरणः मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली (अध्यक्ष, जनरल मोहयाल सभा)

रविवारः 10 जनवरी 2016, प्रातः 11.00 बजे

स्थानः मोहयाल फ़ाउंडेशन, ए–9, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, यू.एस.ओ. रोड, जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110067

नोटः पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पत्र द्वारा सूचना भेज दी गई है।

संपर्कः 011–41783232, 26561504, 26560456
E-mail: gmsoffice2003@gmail.com

मोहयाल सभाओं की गतिविधियाँ

फरीदाबाद

मोहयाल सभा फरीदाबाद की मासिक बैठक 01 नवंबर 2015 को मोहयाल भवन में श्री रमेश दत्ता जी की अध्यक्षता में समन्न हुई, जिसमें लगभग 30 भाई बहनों ने भाग लिया। मोहयाल प्रार्थना के पश्चात की कार्यवाही–

शोकः श्री विजय कुमार दत्ता, निवासी जवाहर कॉलोनी जिनकी मृत्यु 29.10.15 को उनके निवास पर हुई व उठाला 31.10.2015 को सनातन धर्म मंदिर में हुआ, के लिए दो मिनट का मौन धारण किया गया व सभी ने उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

रायज़ादा के.एस. बाली जी ने पिछले माह की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई व सभी को सूचित किया कि 6 दिसंबर 2015 को भवन की दूसरी मंजिल का उद्घाटन श्री ओ.पी. मोहन जी के करकमलों द्वारा किया जाएगा व प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। सभी अभिभावक अपने बच्चों के साथ अवश्य समय पर पहुँचे। छोटे बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया जाएगा, सभी बच्चे गीत, नृत्य आदि की तैयारी करके आएँ।

इस अवसर पर श्री वीरेन्द्र कुमार छिब्बर, निवासी सेक्टर–14, जो पहली बार बैठक में आए थे, का सभी ने स्वागत किया व उन्हें आग्रह किया कि भविष्य में सभी सभा में वे सक्रिय रहें व अपना सहयोग देते रहे। उन्होंने भी सभा को सहयोग देने का आश्वासन दिया। श्री ओ.पी. मोहन जी, जो पिछले काफी समय से हिमाचल प्रदेश में थे, का भी सभी उपस्थितजनों ने स्वागत किया। इस अवसर पर श्री राजेन्द्र मेहता जी ने योग व उसके आसनों के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी।

श्री मिथलेश दत्ता जी ने निम्न राशि एकत्र की– श्री ओ.पी. मोहन दो लाख रुपए व श्री नागेन्द्र दत्ता 5100 रु. भवन निर्माण के लिए सहयोग राशि व श्री आर.सी. दत्ता ने 500 रु. विधवा फंड के लिए भेंट किए।

प्रधान श्री रमेश दत्ता जी ने सभी मोहयाल भाई–बहनों को सपरिवार 6 दिसंबर 2015 को मोहयाल भवन में उपस्थित होने का आग्रह किया व श्री आर.सी. दत्ता जी को स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था करवाने के लिए सभी की ओर से धन्यवाद किया। श्री रमेश दत्ता जी ने सभी मोहयाल भाई–बहनों को अपनी व अपनी सभा की ओर से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

रमेश दत्ता, *प्रधान*
मो.: 9212557096

रायज़ादा के.एस. बाली, *महासचिव*
मो. 9899068573

अंबाला छावनी

मोहयाल सभा अंबाला कैंट की बैठक 8.11.2015 को सुभाष पार्क अंबाला कैंट में प्रधान श्री आई.आर. छिब्बर जी की अगुवाई में सभा की मीटिंग शुरू हुई, जिसमें 9 मोहयाल भाई–बहनों ने भाग लिया। मोहयाल प्रार्थना व शांति पाठ के बाद जन.सेक्रेटरी ने पिछली मासिक बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई तथा सर्वसम्मति से अनुमोदन हुआ। सदस्यों को अवगत कराया गया कि दिसंबर में, जीएमएस की सदस्यता (वार्षिक) तथा मोहयाल मित्र के लिए निवेदन पत्र भेजे जाएँगे। अतः इच्छुक सदस्य साल 2016 के लिए नियुक्त राशि सचिव कोषाध्यक्ष को दे दें ताकि समय पर जीएमएस को भेज सकें। साथ ही सभी सदस्यों को बताया गया कि मोहयाल सभा एकाउंट में श्री धर्मेन्द्र वैद सेक्रेटरी फाईनेंस व एचएफओ एम. एल. दत्ता जी के नाम बतौर अधिकृत हस्ताक्षरी दर्ज हो गए हैं। मोहयाल सभा के नाम पर पैन नं. भी मिल गया है। जिससे सभा की एफ.डी पर कोई कटौती नहीं होगी।

प्रधान जी ने श्री नवीन वैद तथा उसके बेटे का भव्य स्वागत व चाय नाश्ते के प्रबंध के लिए धन्यवाद करते हुए, दीवाली की शुभकामनाएं दीं।

एचएफओ एम.एल. दत्ता, *महासचिव*
मो. 9896102843

नजफगढ़–नई दिल्ली

मोहयाल सभा की बैठक 01.11.2015 को प्रधान शेरजंग बाली की अध्यक्षता में श्री हर्ष दत्ता के निवास स्थान दत्ता प्लाजा, ओल्ड रोशनपुरा, नजफगढ़, नई दिल्ली में मोहयाल प्रार्थना व गायत्री मंत्र के उच्चारण से आरम्भ हुई, जिसमें 14 सदस्यों ने भाग लिया। पिछली मीटिंग की कार्यवाही श्री हर्ष दत्ता सचिव ने पढ़कर सुनाई जिसका सर्वसम्मति से अनुमोदन हुआ।

प्रधान जी ने अनुरोध किया कि बैठक में ज्यादा से ज्यादा लोग आएँ। इस पर श्री एम.आर. बाली जी ने अपने विचार रखे कि प्रत्येक मोहयाल के घर जाकर मिलना चाहिए, युवा सदस्यों को बैठक में भाग लेना चाहिए। प्रधान जी ने इस पर अपनी सहमति दी तथा श्री हर्ष दत्ता सचिव व अन्य सदस्यों को इसके लिए जिम्मेवारी दी गई। इसके पश्चात ले.कर्नल बी. के.एल. छिब्बर (से.नि.) ने अपने विचार रखे तथा अपने अनुभव बताए कि सदस्य तीन प्रकार के होते हैं– रुचि रखने वाले, अपने स्वार्थ के लिए और अपने बच्चों की शादी के लिए रिश्ता–नाता करने के लिए।

ले. कर्नल बी.के.एल. छिब्बर (से.नि.) ने बताया कि विधवा

सहायता पाने वाली महिलाएँ यदि कोई प्रोफेशनल कोर्स करके अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने परिवार का निर्वाह करना चाहती हैं तो जीएमएस हर संभव आर्थिक सहायता करने को तैयार है। इसके लिए श्रीमती ममता देवी दत्ता ने निजी व्यवसाय करने की इच्छा की है, जिसे जीएमएस ने मान लिया है तथा इसके लिए 15,000 रुपए की राशि की स्वीकृति की है।

एम.एस. नजफगढ़ ने श्रीमती कान्ता देवी छिब्बर को उनके बीमार होने पर उनकी आर्थिक सहायता कैश में तथा कंबल व अन्य वस्त्र देकर की तथा उनको इलाज के लिए खेड़ा डाबर अस्पताल में भर्ती करवाया। सभी ने उनके शीघ्र ठीक होने के लिए प्रार्थना की। श्री योगराज बाली (दीनपुर) की पत्नी अस्पताल में एडमिट है। सभी ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना की।

अगली बैठक दिनांक 06.12.2015 को श्रीमती कृष्णा बाली के निवास स्थान आरजेड–119, ब्लाक–एस, गली नं.7, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ नई दिल्ली में होगी। सभी सदस्यों से उपस्थित होने का निवेदन है।

शेरजंग बाली, *प्रधान* — ***हर्ष दत्ता,*** *सचिव*
मो.: 9871756765 — *मो. 9312174583*

होशियारपुर

मोहयाल सभा होशियारपुर की बैठक 8.11.2015 को प्रधान श्री श्यामसुन्दर दत्ता की अध्यक्षता में मोहयाल भवन ऊना रोड पर हुई। प्रधान जी जो अमेरिका से आए, ने सभी को चाय पार्टी दी। सभी मोहयाल भाईयों ने प्रधान जी को यू.एस.ए. में उनके पोते तथा दोती के उनके परिवार को तथा उन्हें बधाई दी। प्रधान जी ने सभी मोहयाल परिवारों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं तथा सभी को धन धान्य से समृद्ध होने के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

श्री शशपिन्द्र बाली, ए.एस.आई पंजाब पुलिस से जो सेवानिवृत्त हो रहे हैं, ने सभी को अपनी रिटायरमेंट पार्टी तथा जागरण पर आमत्रिंत किया। प्रधान जी ने कहा कि यदि कोई बच्चों या महिलाओं की कोई समस्या हो तो उनके बारे में सभा को बताया जाए। इस अवसर पर प्रधान श्यामसुन्दर दत्ता, अश्वनी दत्ता, सुभाष चन्द्र दत्ता, इन्द्रमोहन बाली, आर.सी. मेहता, अरविंद मेहता, मनोज दत्ता, ओंकार बाली, वरिन्द्र दत्त वैद, उपप्रधान दिनेश दत्ता, श्री पी.पी. मोहन, जगमोहन मेहता विशेष रूप से उपस्थित थे।

मनोज दत्ता व विजयंत बाली

जगाधरी वर्कशाप

मोहयाल सभा जगाधरी वर्कशाप की मासिक बैठक 01.11.15 को प्रधान श्री सतपाल दत्ता की अध्यक्षता में की गई। गायत्री मंत्र का पाठ और मोहयाल प्रार्थना की गई। मीटिंग में नरेश मेहता, कुलभूषण वैद, अशोक बाली (वकील), अश्वनी बाली, विकास वैद, अशोक वैद और अन्य कई सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। सब लोगों को दीपावली और आने वाले त्योहारों की बधाई।

मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली जी के जी.एम.एस. प्रधान बनने पर सदस्यों ने काफी खुशी प्रकट की और सदस्यों ने एक–दूसरे को बधाई दी। प्रधान जी ने सबका धन्यवाद किया जलपाल के बाद सभा समाप्त हुई। अगली मीटिंग 6.12.15 को होगी।

सतपाल दत्ता, *प्रधान (7082068426)*

सहारनपुर

मोहयाल सभा की मासिक बैठक प्रेम वाटिका 14ए स्थित वरिष्ठ सदस्य बलबीर मोहन के निवास पर अनिल बक्शी भोली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, प्रार्थना के पश्चात रवि बक्शी ने विगत माह की बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनवाई।

सभी सदस्यों को विजयदशमी व नवरात्रों की शुभकामनाएँ देते हुए अनिल भोली ने सुझाव दिया। सभा का अतिरिक्त रजिस्टर बनाकर नगर के कोने–कोने में जाकर मोहयालों के परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का बायोडाटा लिया जाए, जिससे संगठन को मजबूती मिले।

रजिस्टर तैयार करने की जिम्मेदारी मुकेश दत्ता को सौंपी गई। पवन दत्ता व रवि बक्शी ने विचार रखते हुए कहा नगर स्तर पर मोहयाल परिवार मिलन का कार्यक्रम रखा जाए, सभी ने स्वागत किया। दिसंबर माह में 27 तारीख पर कार्यक्रम का आयोजन होगा।

बलबीर मोहन ने कहा सभा का मासिक सहयोग को लगाया जाए जिससे सभा में फंड बढ़ सके। राकेश दत्ता ने बताया जो मोहयाल बंधु किसी कारण सभा में नहीं पहुँच पाते उनको कार्यवाही के बारे में सूचना जरूर दें।

विश्वामित्र मोहन जी व दिनेश दत्ता पिछले कई दिनों से बीमार चल रहे हैं उनके स्वस्थ होने की शुभकामना की गई। युवा हृदय गौरव मेहता, रूपक मोहन, लाविश मोहन, राघव दत्ता का गर्म जोशी से स्वागत किया गया। सभी सदस्यों ने मिलकर निर्णय लिया मोहयाल मिलन में बुजर्ग मोहयालों का सम्मान किया जाना चाहिए।

आगामी बैठक आनन्द नगर स्थित मुकेश दत्ता के निवास पर होगी। जलपान के लिए सभी ने बलबीर मोहन का धन्यवाद दिया।

अनिल बक्शी भोली — ***रवि बक्शी***
प्रधान — *मो. 9897645347*

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

इंसानियत की एक सच्ची मिसाल

हमारा भारतवर्ष सचमुच में एक महान देश है। इसकी महानता की महक विश्व में विख्यात है। विश्व में भारत की गाथाओं में से एक गाथा परोपकार के कार्यों की भी है। परोपकार का एक सच्चा वाक्य दिल्ली के डॉ. जगजीत सिंह बत्रा ने एक अंग्रेजी समाचार पत्र में लिखा है जो मेरे दिल को छू गया। डॉ. बत्रा ने इस सच्चे वाक्या को कुछ इस प्रकार लिखा है:–

दमे से पीड़ित, हरदेवा नाम का मेरा एक मरीज है, जिसकी आयु लगभग 58 वर्ष की है। उसके परिवार में उसकी पत्नी रामप्यारी पुत्र प्रह्लाद और तीन वर्ष का एक पोता है। पोते का पालन–पोषण उसकी दादी रामप्यारी करती है क्योंकि प्रह्लाद की पत्नी (पोते की माँ) उसे छोड़कर चली गई है।

जवानी के दिनों में हरदेवा बैण्ड वालों के साथ बारात में शहनाई बजाकर अपने परिवार का पालन–पोषण करता था। परन्तु अब वह एक रिटायर्ड रोगी एवं वृद्ध असहाय व्यक्ति है। हरदेवा का परिवार अब पुत्र प्रह्लाद के तीन हजार रुपए के थोड़े से वेतन पर ही निर्भर है। प्रह्लाद ओखला में एक एक्सपोर्ट फैक्ट्री में तीन हजार रुपए मासिक वेतन पर चपरासी की नौकरी करता है। प्रह्लाद की पत्नी इसको छोड़कर चली गई है।

दोनों आँखों में मोतिया होने के कारण अब हरदेवा को दिखना भी कम होता जा रहा था। मोतिया के इलाज के लिए मैंने हरदेवा को चांदीवाला आँखों के अस्पताल में भेजा जो कालकाजी मंदिर से दो किलोमीटर के फासले पर है। हरदेवा ने अस्पताल में जाकर अपनी आँखें डाक्टर को दिखाई, डाक्टर ने उसे दोनों आंखों में मोतिया के आप्रेशन करवाने को कहा जिसके लिए उसे तीन दिन तक अस्पताल में रहना पड़ेगा और 15000 रुपए आप्रेशन के देने होंगे। यह बात सुनकर हरदेवा अस्पताल से उदास होकर बाहर आया और मन ही मन सोचता चला जा रहा था कि आप्रेशन के बाद तीन दिन तक रामप्यारी को भी मेरी देखभाल के लिए मेरे साथ अस्पताल में रहना पड़ेगा तो इस परिस्थिति में पोते की देखभाल कौन करेगा तथा ऑप्रेशन के लिए 15000 रुपए कहाँ से जुटाऊँगा। अब थोड़ी सी जो उम्र बाकी है उसे अंधा होकर ही काटनी पड़ेगी। इस सोच में डूबा हुआ न जाने वह कब बस स्टैण्ड पर आकर खड़ा हो गया।

कहते हैं ईश्वर सबका साथ देता है, सोच में डूबा हुआ हरदेवा जब बस स्टैण्ड पर आकर खड़ा हुआ तभी भगवान की कृपा से उसके पास साफ–सुथरे कपड़े पहने हुए एक सिख भद्र पुरुष आया और हरदेवा से पूछा कि वह चिंतित एवं परेशान क्यों हैं? हरदेवा ने अपनी मजबूरी की कहानी उसे बताई। इस कहानी को उस सिख भद्र पुरूष ने बड़े ध्यान से सुना और हरदेवा को उसी समय अपने साथ चांदीवाले आँखों के अस्पताल में वापिस ले गया। डॉक्टर को हरदेवा की आँख के ऑप्रेशन के लिए अपने पास से एडवांस में पैसे दिए और हरदेवा को तीन दिन बाद ऑप्रेशन की तारीख मिली। सरदार जी ने हरदेवा को समझाया कि वह ऑप्रेशन के प्रति अपनी पत्नी को कुछ नहीं बतायेगा, उसे यह कहकर अस्पताल में आयेगा कि वह तीन–चार दिन के लिए रिश्तेदारी में जा रहा है। तीन दिन बाद अपने वचन के अनुसार वह सिख भद्र पुरूष हरदेवा को चांदीवाला अस्पताल के बाहर मिला। उसने हरदेवा की आँखों का आप्रेशन करवाया और उसकी देखभाल के लिए वह स्वयं तीन दिन तक अस्पताल में रहा। हरदेवा के शरीर की साफ–सफाई करता और गंदे कपड़े उतारकर साफ–सुथरे कपड़े पहनाता।

तीन दिन बाद उस सिख भद्र पुरूष ने अस्पताल का सारा भुगतान चुकाकर हरदेवा को ऑप्रेशन के बाद दवाई आदि के खर्चे के लिए कुछ पैसे देकर उसे ऑटो रिक्शा में बैठाकर घर भेज दिया और स्वयं वहाँ से चुपचाप चला गया। न तो वह भद्र पुरूष जानता था कि हरदेवा कहाँ रहता है और न ही हरदेवा उस भद्र पुरूष के बारे में कुछ जानता था।

दान के प्रति गुरूबाणी में भी लिखा है ''खुद जाके दयो, छपा के दयो, रजा के दयो''

स्मरण रहे कि हमारी मोहयाल बिरादरी में भी परोपकारी एवं दान–दाताओं की कमी नहीं है। बिरादरी में ऐसे–ऐसे दान–दाता हैं जो हर समय हरदेवा जैसे दुखियों की सेवा करने के लिए तत्पर रहते हैं और जीएमएस कोष में सदा दान देते रहते हैं। ऐसे दानी एवं महापुरूषों को मेरा हार्दिक नमन्।

ले. कर्नल बी.के.एल. छिब्बर (से.नि.)
नजफगढ़, नई दिल्ली (मो.) 9210869406

अमन वो चैन का दुश्मन हथियार

तीर बने! तलवार बनी! बन्दूक बनी!
तू सुन ओ तोपों के रखवाले।

क्यूं एटम बम्ब बना के मारे,
तूने! फूलों जैसे बच्चे तारे।।

ये माताओं की सुन्दर दुनियां, बेटियां–बेटे रोज सवारें
युवक–युवतियां संसार बना रहें, आकाश में देखों बने चौबारें।

अरबों–खरबों खर्च करे, क्यूं जहरीले हथियार बनावें
जीवन हैं खुशियों की मंजिल, जिस पर चलते हम–तुम सारे।

कहां गए रावण, दुर्योधन हिटलर जो थे हत्यारें
ओ मानव मगरूर, छोड द्वैत, तू भी आजा मिलकर पकड़े चांद–सितारें।

चढ़ता चाँद कहे अमावस को, मैं आऊ तू क्यूँ घबरावें,
आओ मिलकर सूरज लायें, ''बक्शी'' मिट जाऐं अंधियारें।

वजीर चन्द बक्शी

कॉमरेड वज़ीरचंद बक्शी का संक्षिप्त जीवन परिचय

कामरेड बक्शी का जन्म 1 जनवरी 1899 में जिला रावलपिंडी (पाक) के ग्राम बागजोंगियां में हुआ था। वो पुरूषार्थी के रूप में राम गढ़ तहसील के गांव मिलकपुर में आकर बसें। बक्शी जी 1924 में कांग्रेस पार्टी के सदस्य बने थे। भारत में जब स्वाधीनता आंदोलन चल रहा था, उस वक्त उसमें वों खुलकर भाग लेने लगे थे। उनके मन में प्रारंभ से ही गरीबों, मजदूरों व किसानों के प्रति बड़ी हमदर्दी थी। यही कारण था कि बक्शी जी ने पाकिस्तान में भूमिहीनों के लिए बहुत संघर्ष किए। अलवर आने पर भी उन्होंने इस लड़ाई को जारी रखा। सन् 1951 में वो भी चुने गए थे। ग्राम मौजपुर सैदका रुन्ध जो लगभग 1400 बीघा की थी, जो जन आन्दोलनों के माध्यम से सैकड़ो भूमिहीनों किसानों को भूमि दिलाई। इन आंदोलन का नेतृत्व कामरेड बक्शी ने ही किया था।

वो कांग्रेस पार्टी में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता बाबू शोभाराम जी के नजदीकों में रहें। परन्तु अलवर में कम्युनिस्ट पार्टी के जुझारू नेता कामरेड रामानन्द अग्रवाल के गरीबों व किसानों के प्रति किए जा रहें लगातार आन्दोलनों से प्रभावित होकर वे न केवल उनके संपर्क में आए अपितु कांग्रेस पार्टी को कम्युनिष्ट पार्टी में शामिल हो गए।

बक्शी जी सन् 1965 में लक्ष्मणगढ़ को छोड़ कर अलवर शहर के मौहल्ला लाल डिग्गी में स्थाई रूप से बस गए। वो एक अच्छे किसान थे तथा कृषि के मामलों में अच्छी जानकारी थी। उन्होंने 10 क्यूबिक का सबसे पहले गोबर गैस प्लांट लगा कर कृषि के आधुनिकीकरण की दिशा में कार्य करने वाले सबसे पहले व्यक्ति थे। कॉमरेड बक्शी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने लगे। उनको पढ़ने का बहुत शौक था तथा वो अपने भावों को कविता के माध्यम से कहने का जज्बा भी रखतें थे। उनकी कविताओं का समाचार पत्रों आदि में भी प्रकाशन होता था। वो अलवर में स्वतंत्रता सेनानियों के संरक्षक पद पर भी रहे। उनका मेव कम्युनिटी में जबरदस्त बोलबाला था। ग्राम बडा बास बूंटोली में उनके कार्यों का ही परिणाम था कि ये ग्राम केरल के नाम से जाने जाते थे। कॉमरेड की वामपंथी विचार धारा के प्रति गहरी समझ व लगाव का ही परिणाम था कि वो अपने परिवार के अधिकांश सदस्यों को पार्टी की गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते थें, तथा उनके परिवार का एक सदस्य आज भी किसान व मजदूरों में सक्रिय रूप से कार्य करता है। बक्शी जी का गरीबों के प्रति भावनात्मक व वैचारिक लगाव का परिणाम था कि उन्होंने वामपंथी विचार धारा के जुझारू नेता का. रामानन्द अग्रवाल के नाम पर कॉलोनी बनाकर अपनी बेशकीमती जमीन को बड़े सस्ते दामों में गरीबों व अल्प आय वालों में बेच दी।

का. बक्शी ने जिन लोगों के साथ कार्य व जन आंदोलन किए उनमें का. रामानन्द अग्रवाल, रामजीलाल अग्रवाल, हरूमल तौलानी, रामकिशोर कौशिक, पांचाराम चांवरियां, ऐसी लाल विद्यार्थी, फूल चन्दगोढडियां, भैरू राम सैनी, हरीनारायण सैनी, रतिराम यादव, दयाराम गुप्ता, जेलदार, सरदार जसवंत सिंह, साधूसिंह, चौ. नत्थी सिंह, मम्मलखाँ, प्रभुदयाल विजय, जगनसिंह, बनवारीलाल, सेवक राम, डाक्टर बाल्याण, का. हरदेव सहाय, कामरेड ज्ञानचन्द खामरा कृपादयाल माथुर, हरीराम चौहान, और का. एच.के. ब्यास आदि प्रमुख रूप से शामिल है।

कामरेड बक्शी लंबे समय तक कम्युनिस्ट पार्टी के जिला व राज्य कौंसिल के सदस्य रहें। कॉमरेड बक्शी की स्मृति में रामानन्द नगर वासियों ने उनके नाम पर एक "बक्शी वज़ीर चन्द सामुदायिक भवन" तथा अलवर के जागरूक नागरिकों ने कामरेड वजीर चंद बक्शी स्मृति संस्थान नाम का संगठन भी बनाया हुआ है। उनका निधन 24 अप्रैल 1995 को अलवर शहर में हुआ। उनके पाँच पुत्र थे श्री गिरधारी लाल बक्शी, स्व. बिहारीलाल बक्शी, स्व. गुलजारी लाल बक्शी, श्री रोशनलाल बक्शी और राज कुमार बक्शी।

कॉमरेड वजीरचंद बक्शी, *स्मृति संस्थान अलवर*

तिथियाँ

आज सुबह से ही उमा का ज्यादा समय ड्राईंग रूम में या उसके आस–पास ही बीत रहा था, वैसे बाकी के दिनों में रसोई या बैड रूम के एल.ई.डी. में ही बीत जाता था। सुबह पूजा पाठ करने के बाद दोनों ने नाश्ता किया और मैं मकान के पीछे किचन गार्डन में फूल पौधों की क्यारियों की घास निकालने चला गया। लौटकर आया तो देखा उमा ड्राईंग रूम में टेलीफोन के पास बैठकर एक पत्रिका पढ़ रही थी। मैं कुछ कहता इस से पहले वह बोली जरा देखना जी नराते कब से शुरू हो रहे हैं। मैनें मुस्कराकर कहा मैडम जी अभी तो पितृपक्ष शुरू होने में भी 15–20 दिनों का समय है। उसने कहा हाँ जी मेरा वही मतलब है। माता जी की तो पहले दिन की तिथि है और पिता जी कि त्रियोदशी। मैंने मन ही मन उमा का आभार व्यक्त किया कि उन्हें मेरे माता–पिता जी कि तिथियाँ याद हैं। यह उसका स्वभाव ही है उसे परिवार के सभी सदस्यों कि जन्म तिथि, शादी की तिथियाँ याद रहती है। और सभी को वह बधाई भी देती रहती है। बच्चे बड़े हो गए थे दूसरे बड़े शहरों में नौकरी कर रहे थे। बेटी ब्याह कर अपने घर चली गयी थी। मैं सेवानिवृत हो कर अपना समय किताबों और रोजमरा के घर के छोटे–छोटे कामों में उमा का हाथ बटा कर व्यतित कर रहा था। बहु बेटा और गृहस्थी में दूसरे बड़े शहर में व्यस्थ थे। परन्तु बहु हमेशा कहती है– मम्मी जी किसी का भी जन्मदिवस हो सबसे पहले आपका ही बधाई का फोन आता है, परन्तु आज उमा का जन्मदिवस है, अभी शाम के सात बजने को आ गए परन्तु बेटे का फोन नहीं

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

आया मैं उसकी उत्सकता को समझ रहा था। वह आज ज्यादा समय ड्राईंग रूम में रखे टेलीफोन के आसपास क्यों बिता रही है।

कुछ दिन पहले ही उमा ने आग्रह करके एक लैपटॉप खरीदवाया था, कि सकाईंप पर बच्चों से बात हो जाया करेगी। कम से कम उनका चेहरा तो देखने को मिल जायेगा। मुझसे उमा की वह उत्सुकता देखी नहीं गई। मैंने कहा आप ही फोन लगा लो। अब तो बच्चे घर आ गए होंगे, रात के आठ बज रहे हैं।

उसने फोन लगाया और सबका हाल चाल पूछना शुरू किया, काफी देर तक बातचीत होती रही, परन्तु दूसरी तरफ से जन्मदिवस की बधाई देने की बात नहीं हुई। हारकर मेरे सबर का बाँध टूट गया और मैंने उमा से फोन लेकर बेटे से पूछा आज क्या तारीख है। उसने साधारण से लहजे में तारीख बता दी। मैंने पूछा आज कुछ खास दिवस है। तब उसे याद आया कि आज उसकी माँ का जन्मदिवस है।

मैंने कहा अभी हमारे जन्मदिवस याद रखेगे तब ही तो हमारी पुण्य तिथियाँ याद रख पाओगे। तिथियों और तारीखों का जीवन में अपना एक अलग ही महत्व है यह आपको अपनों से जोड़ता है और अपने आसपास रखता है।

प्रदीप कुमार छिब्बर, *ज्योति नगर, जगाधरी*
मो. 7206402640

नन्द किशोर मेहता

हम सब भाई बहनों की "बाऊजी" को श्रद्धांजलि

आज "बाऊजी" की सातवीं बरसी है। दैहिक रूप से उनका बैकुण्डवास हो गया है, परन्तु आत्मिक रूप से वे एक प्रकाशस्तम्भ की तरह हमारे बीच में हमेशा चमकते रहेंगें।

वे स्पष्टवादी धार्मिक प्रवृत्ति और दूरदर्शी थे। अपनी जिंदगी में संघर्ष करते हुए और जरूरतमंदों की मदद करते हुए आगे बढ़े।

बाऊजी मैंने आपके दोहते विक्की की शादी कर दी है पर आपकी कमी कोई पूरी न कर सका, हाँ आपके आशीर्वाद के रूप को उसके मामा–मामी जी ने बखूबी निभाया।

उन्होंने अपने बच्चों की पढ़ाई, परवरिश शादियाँ सहित अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को अनदेखा नहीं किया। जितना हो सका अच्छी तरह निभाया। कभी असमर्थता नहीं जताई।

मैं उस परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि मेरे बाऊजी की आत्माओं को शांति प्रदान करें। हमें उनका आशीर्वाद सदैव मिलता रहे।

*आपकी बेटी–**सुनीता दत्ता***

श्रद्धांजलि

डॉ. मेहता वशिष्ठ देव मोहन को स्वर्गवास हुए 12 वर्ष हो गए। उनकी याद में 6 सितंबर 2015 को उनकी पुत्रवधु शशि मोहन के घर 325, मॉडल टाऊन, अंबाला में हवन–यज्ञ रखा गया। दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि देने के लिए संबोधित परिवारों के निम्न सदस्य शामिल हुए।

पंचकुला से प्रतिष्ठा का छोटा बेटा रि. कमांडर अमिताभ दत्त का परिवार–संगीता, श्रीया व आर्यन दत्त।

पानीपत से ऋत मोहन, तन्मय मेरी भाभियाँ– श्रीमती रणजीत कौर, विनोद दत्त व निर्मल दत्त।

फरीदाबाद, नौएडा से रिट. कमांडर आलोक मोहन, उसकी पुत्री वारिधि व दामाद श्री मानस जी।

करनाल से मेरे देवर श्री कपिल मोहन (स्वर्गीय) की पुत्रवधु श्रीमती अणु मोहन का परिवार–पुत्र राहुल मोहन, बहु गीता व बच्चे।

मेरे देवर डॉ. विश्वामित्र मोहन (भोपाल) के छोटे बेटे नितिन मोहन व पोता वीर मोहन। विश्वामित्र की बेटी कमांडर मनीषा बच्चों की परीक्षा के कारण नहीं पहुँच सकी।

ज़िरकपुर से मेरी भतीजी जतेन्द्र व उसके पतिदेव श्री रतनलाल बाली। खन्ना से भतीजी ममता उसके पतिदेव श्री संजीव छिब्बर व बच्चे। चण्डीगढ़ से शशि मोहन के भाई श्री शशिभूषण बाली व माताजी श्रीमती राजरानी बाली।

6 सितंबर को ही मोहयाल सभा अंबाला की मासिक मीटिंग थी। अतः श्रद्धांजलि सभा में बहुत थोड़े मोहयाल बहिन–भाई शामिल हुए। तथा एम एस अंबाला के अध्यक्ष श्री जे.पी. मेहता व उनका परिवार, श्री विक्रम दत्त (विक्की) व उनकी पत्नी। श्री अश्विनी जी व अन्य। हमारे दामाद रि. विंग कमांडर एम. बी. दत्त बहुत समय से बीमार हैं। अतः उनका अंबाला आना मुश्किल था। उनका बड़ा बेटा वीरेश दत्त तथा शशि मोहन का बेटा वसु मोहन मुम्बई में है। अतः वे भी नहीं पहुँच सके।

मेरी हार्दिक इच्छा थी कि एक बार मैं समस्त परिवार को इकट्ठा देख सकूँ। परन्तु परिवार के कुछ सदस्य श्रद्धांजलि सभा में शामिल नहीं हो सके। कर्नल जगदीश मित्र मोहन जिनका देहान्त जून 2000 में हो गया था। उनके परिवार का कोई भी सदस्य नहीं पहुँचा। उनका छोटा बेटा उत्कर्ष मोहन व परिवार दुबई में है। जगदीश मेरा देवर ही नहीं था, मैं उसे छोटे भाई की तरह मानती थी। मेरे विवाह से पहले मेरे पिताजी उसे समुंद्री ले आए थे। और वह हमारे परिवार का सदस्य बन गया था। वहां उसने पाँचवी कक्षा पास की थी। 1945 ई. में मेरा विवाह हो गया। 1946 अक्टूबर में मेहता जी राजकीय कॉलेज लुधियाना में लैक्चरार लग गए। जगदीश

की हमारे पास ही शिक्षा हुई। एम.ए. भूगोल के अन्तिम वर्ष में उसे सेना में कमीशन मिल गया। उसने प्रतिष्ठा, समीर, ऋत व आलोक को जितना प्यार दिया, शायद ही किसी चाचा ने अपने भतीजे–भतीजी को दिया हो।

मोहयाल सभा, अम्बाला को ग्यारह सौ रुपए भेंट करती हूँ और जनरल मोहयाल सभा को ग्यारह हजार रुपए शिक्षा फंड में भेंट किए।

लज्जा देवी मोहन, *325, मॉडल टाउन अंबाला शहर*
मो. 09671432717

स्व. कैप्टन शिवदत्त मेहता की पुण्य-स्मृति

(14 मई 1928–26सितंबर 2014)

कुछेक शख्सियतें ऐसी होती हैं जो
ल. जों के दायरे में नहीं बाँधी जा सकती,
कई यादें ऐसी होती हैं जो
कभी भी भुलाई नहीं जा सकती,
और चंद बातें ऐसी होती हैं जो
किसी शख्स की वजह से और खास हो जाती हैं।

घर गृहस्थी में रहते हुए भी
''संत जैसी सोच रखों–ये सिखा गए,
दुनियादारी निभाते हुए भी
महान आत्माओं सा जीवन बिता गए
जाने का वक्त आया तो
देखना सुनना सब बंद हो गया,
जाते–जाते भी, भी अपनी मस्त मलंग
फ़कीरी दिखा गए...''

26 सितम्बर को हमारे पिताजी को परलोक सिधारे एक वर्ष हो गया, पर यकीन मानिए ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो। उनकी एक–एक बात ऐसे ज़ेहन में आती है जैसे कोई गुरु अपने प्रिय शिष्य को बैठकर समझा रहा हो उनसे ही सब कुछ सीखा है अपने जीवन में सब कुछ हमने। उनकी नम आँखें ये सन्देश देती थी कि कभी भी अपनी आँखों का पानी कभी न मरने दो, यानी हमेशा दिल को आत्मीयता और प्रेम को ओतप्रोत रखो। डैडी ने कभी प्रवचन नहीं दिया। जो भी समझाया, उसका पालन स्वयं अपने जीवन में भी किया। थोड़ी सी तनख्वाह में भी अपने माता–पिता को पहले पैसे भिजवाना, बड़े भाईसाहब को अपने पिता समान समझना, कभी किसी को अपशब्द न कहना, छोटों

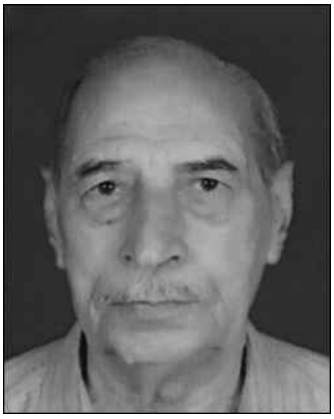

को भी प्रेम और मान–सम्मान देना–ये सब डैडी जी के स्वभाव के अभिन्न अंग थे। हमारे परिवार के अडिग स्तम्भ थे वो। हर सदस्य की उनसे अपनी–अपनी कुछ यादें जुड़ी हुई हैं।

लेकिन, मैं तो यही जानती हूँ कि वो मेरे friend, philosopher और guide, तीनों ही थे। उन्होंने मुझे अपनी बहू नहीं, अपनी बेटी ही समझा। आज उनके मार्गदर्शन के बिना मैं खुद को दिशाहीन ही महसूस करती हूँ। हमारे मन, कर्म और वचनों में डैडी जीवित रहेंगे, हमेशा!

उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर उनके बेटे और पुत्रवधू श्री सुरत मेहता और श्रीमती मीनाक्षी मेहता ने मोहयाल सभा वेस्ट ज़ोन को 500 रुपए की राशि भेंट की है।

सुरत कुमार छिब्बर, *विष्णु गार्डन, नई दिल्ली*
मो. 88004982448, 9911172249

स्वर्गीय उत्तमचन्द लव

शरीर माध्यम, खल धर्म साधनम् अर्थात् धर्म को साधने में शरीर ही मुख्य माध्यम है। इसलिए हठ योग या इसी तरह के अन्य साधन अपनाने से जिससे आत्मा शरीर या प्राणों का ह्रास (घटना) हो ऐसी क्रियाओं का क्या कोई लाभ है? अतः हर एक जीव को उस ''परम आत्मा'' से लौ इस तरह लगानी चाहिए जिससे उसका ''राम'' उसे मिल जाए। अपने जीवन में खास तौर से इस मनुष्य योनि में मन, वचन और कर्म से शुद्ध होकर स्मरण और समर्पण का भाव जाग्रत रखें। इन्हीं साधारण प्रक्रियाओं से हमारे पिताश्री उत्तम चन्द लव ने 11.11.1971 को यह माया संसार छोड़कर मोक्ष को प्राप्त हुए। अब 11.11.2015 को परिवार ने यथा योग्य दान कर तीनों पुत्रों ने श्रद्धांजलि दी। तथा 250 रुपए जीएमएस के शिक्षा फण्ड में भेंट किए।

नरेन्द्र लव, *शाहदरा, दिल्ली*
मो. 9911564481

मोहयाल मित्र में रचनाएँ भेजने के पश्चात् प्रकाशन के लिए दो माह तक प्रतिक्षा करें। इसके पश्चात् ही कार्यालय से संपर्क करें। कृपया समस्त रचनाएँ-रिपोर्ट साफ-साफ लिखें जिन्हें पढ़ा जा सके। पोस्ट कार्ड या छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर रचनाएँ न भेजें। ई-मेल से भेजी रचनाएँ और रिपोर्ट साफ-साफ लिख कर भेजें। नहीं तो छप नहीं पाएगी।

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

होना या ना होना

हमारी जिंदगी उलझी हुई सी रहती है, क्यों कभी सोचा है। हमें हमेशा इन्हीं बातों को क्यों सोचते रह जाते हैं कि हमारे इस चीज की कमी है हमारे पास दूसरों की तरह वो सभी साहुलितयतें नहीं है। हम क्यों यह नहीं सोच पाते कि हमारे पास क्या है। यह दोनों बातें निर्भर करती है। हमारी सोच से और इस सोच से उत्पन्न संतुष्ट व असंतुष्ट करने की भावना से। आज जिन्दगी की गाड़ी इतनी तेजी से पटरी पर दौड़ती जा रही कि जैसे गाड़ी बीच में आए स्टेशन पर रुकना ही भूल गयी हैं। उसे याद ही नहीं रहा कि कुछ मुसाफिरों को उनकी मंजिल पर उतरना है तो कुछ को अपने साथ शामिल करना है। सभी बेहतर से बेहतर पाने की दौड़ में अब्बल आना चाहते हैं चाहे वह नई पौध हों या अपनी पकड़ को मजबूती थामे कोई बड़ा बूढ़ा। आज के समय में किसी चीज का न होना हम पर कितना असर डालता है, हम तिलमिला उठते हैं और कभी–कभार गलत राह पर भी चल उठते हैं। जबकि संतुष्ट होने की भावना हमें अपने के ओर नजदीक ले जाती है। कोई तकलीफ, कोई परेशानी नहीं। अगर हमें अपने अतीत में जाए तो पांडवों द्वारा अपनी हस्तिनापुर पर शासन करने की इच्छा को त्याग कर सिर्फ पाँच गाँवों में संतुष्ट हो जाना एक श्रेष्ठ उदाहरण था। संतुष्ट होना हमारे चेहरे के तेज़ को बढ़ा देता है, परन्तु हमारी असंतुष्टा हमारे चेहरे को व्याकुलता से।

हमारे बड़े हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते हुए यही बताते हैं कि आकाश की ओर देखकर चलने पर हमेशा चोट लगती है और झुकने वाला वृक्ष हमेशा मीठे फलों से लदा हुआ पाया जाता है। क्योंकि वृक्ष में अपने फलों से दूसरों के चेहरे पर खुशी लाता, उनके पेट भरकर उसके लिए चाहे उसे फलों को तोड़ने के लिए मारे गए पत्थर ही क्यों न झेलने पड़े। अपने बड़े की बताए बातों हुई बातों को आगे लेकर जाना। पर इसका अर्थ यह नहीं कि आप विकास की राह या अपनी पहचान बनाने की कोशिश से पीछे हटे बस अपनी बातों के जरिये यही बताना चाहती हूं कि हमें कुछ पाने की लालचा में जो हमारे पास है उसे खोना नहीं चाहिए।

प्रिया बाली, *महरौली, नई दिल्ली (मो.) 9873992990*

जनरल मोहयाल सभा के सदस्य बनें

मोहयालों की सर्वोच्च संस्था के आजीवन सदस्य बनकर अपने समाज के कल्याणकारी कार्यों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें।

केवल 3100 रुपए देकर आजीवन–सदस्य बनें।

मोहयाल समाज की धड़कन 'मोहयाल मित्र' आजीवन–सदस्यों को आजीवन निःशुल्क मिलती है।

आज ही अपना शुल्क 'जनरल मोहयाल सभा' के पते पर भेजें।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें–
फोनः 011-26560456, 26561504
E-mail% gmsoffice2003@gmail.com

''थकन''

थके हारे मुसाफिर के चरणों को धो कर पी लेने से,
मैंने अक्सर देखा है कि मेरी थकन उतर जाती है।

कोई ठोकर लगी अचानक
जब–जब चला सावधानी से
पर बेहोशी में मंजिल तक
जा पहुँचा आसानी से।

रोने वालों के अंधेरों पर अपनी मुरली धर देने से
मैंने यह अक्सर देखा है मेरी तृष्णा भर जाती।

प्यासे अधरों को बिन परसे
पुण्य नहीं मिलता पानी को
याचक का आशीष लिए बिना
स्वर्ग नहीं मिलता दानी को।

खाली पात्र किसी का हो तो, प्यास बुझाकर भर देने से
मैंने अक्सर यह देखा है, मेरी गागर भर जाती है।

लालच दिया मुक्किल का जिसने
वह ईश्वर पूजना नहीं है
बनकर वेद मंत्र सा मुझको
मन्दिर में गुंजना नहीं हैं।

संकट ग्रस्त किसी नाविक को निज पतवार थमा देने से,
मैंने अक्सर यह देखा है, मेरी नौका तर जाती है।

कुसुम मैहता वैद
मोहयाल सभा जगाधरी वर्कशाप (स्त्री सभा)

।। मोहयाल प्रार्थना ।।

ऊँ स्वस्ति। ऊँ परम पिता परमात्मा को हमारा प्रेमपूर्वक नमस्कार। ऊँ स्वस्ति। सभी सुखी हों। सब का कल्याण हो। सबका आपस में प्रेम हो। सब मिलकर अपने समाज की भलाई का विचार करें। सब उसी में अपना भला समझें जिसमें सबका भला हो, हित हो, लाभ हो। मन, वचन और कर्म से कोई दूसरे की हानि न करे। हम एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखें। दूसरों की बातों को धैर्य और शांतिपूर्वक सुनें। अपनी बातें मधुर शब्दों में कहें। हम निःस्वार्थ भाव से अपने समाज की भलाई के लिए कार्य करें।

जय मोहयाल

भैया दूज पर्व

भैया दूज क्यों मनाया जाता है। अधिकांश लोगों को इस पर्व का ज्ञान नहीं। यह पर्व प्रायः दिवाली के दो दिन बाद कार्तिक मास की द्वितीय को आती है।

यमराज की छोटी बहन यमुना अपने भाई यमराज से हमेशा आग्रह करती थी कि भैया आप मेरे घर क्यों नहीं आते। मैं आपसे बहुत नाराज हूँ, आप मेरे घर जरूर आओ परन्तु यमराज अपनी छोटी बहन यमुना के घर जाए कैसे। वैसे भी यमराज को किसी के घर जाना अर्थात मृत्यु का आगमन है। इसलिए यमराज यमुना के घर नहीं जाता था। क्योंकि यमराज मृत्यु का देवता है। हर भाई अपनी बहन की खुशी की कामना करता है। यमराज चाहता था कि हमारी बहन दुखी न हो और सदा खुश रहे, लेकिन बहन चाहती है कि मेरा भाई मेरे घर आए इसलिए यमुना बार–बार अपने भाई यमराज को अपने घर आने का निमंत्रण देती थी।

यमराज अपनी छोटी बहन के बार–बार आग्रह को ध्यान में रख कर यमराज ने एक दिन निश्चित किया कि आज छोटी बहन यमुना के घर जाऊगाँ और चल दिया। अपनी बहन के घर पहुचाँ, यह देखकर कि मेरा भाई मेरे घर आया, यमुना बहुत खुश हुई और अपने भाई यमराज को बहुत अच्छी–अच्छी मिठाई पकवान खिलाई और तिलक लगाया यह सब देख कर यमराज बहुत खुश हुआ इतना खुश हुआ कि उसने अपनी छोटी बहन यमुना को बचन दिया कि बड़ा भाई अपनी छोटी बहन के घर जा सकता है। अपनी बहन को इस स्वागत से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने वचन दिया कि आज के दिन हमारे दूत किसी का प्राण नहीं लेगें और आज के दिन हमारा कार्यालय बन्द रहेगा।

भाई अपनी बहन के घर जाए अच्छे विचार से जाए और अपनी बहन से तिलक लगवाएं। रक्षाबंधन के दिन बहन अपने भाई के घर जाकर तिलक लगा कर राखी बांधती है और अपनी रक्षा की शपथ दिलाती है लेकिन भैया दूज के दिन बहन अपने भाई को तिलक लगाकर उसकी लंबी उम्र की कामना करती है। रक्षा बंधन व भैया दूज में यही अंतर है। रक्षाबंधन सावन की पूर्णिमा को आती है। और भैया दूज कार्तिक मास के द्वितीय को आती है। अर्थात दिवाली के दो दिन बाद। इसका प्रमाण–आप को मथुरा के यमुना नदी के तट पर एक यमराज की प्रतिमा स्थापित है। यमुना अपने भाई यमराज को तिलक लगा रही है। यह मूर्ति भैया दूज की यादगार के रूप में स्थापित की गयी है जोकि भैया दूज की याद दिलाती है।

देश वैद

रोहणी, दिल्ली–110085 फोनः 011–27570821

गीता–सार

- क्यों व्यर्थ में चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।
- जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।
- तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया? खाली हाथ आए, खाली हाथ चले गए। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझकर खुश हो रहे हो। बस यही तुम्हारे दुःखों का कारण है।
- परिवर्तन ही संसार का नियम है। मेरा–तेरा, छोटा–बड़ा, अपना–पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, अब तुम सबके हो।
- न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो। यही सहारा है। जो इस सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता शोक से सर्वदा मुक्त हो जाता है। सब कुछ भगवान को अर्पण कर, तो तू जीवन मुक्त हो जाएगा।

मोहयाल मित्रः सुझाव

'मोहयाल मित्र' जी.एम.एस. कार्यालय नई दिल्ली से प्रत्येक महीने की आखिरी तारीख को 'इन्द्रप्रस्थ डाक व्यवसाय केन्द्र' कोटला रोड नई दिल्ली–110002 से भेज दी जाती है। हमारा प्रत्येक सभा के प्रधान एवं सचिव से अनुरोध है कि वे अपनी सभा के एक प्रतिनिधि को नियुक्त करें जो अपने क्षेत्र के पोस्टमास्टर से प्रत्येक महीने के प्रथम सप्ताह में संपर्क करके वहाँ डाके के आने की जानकारी लेकर एवं जब पोस्ट आफिस में डाक आती है और उसमें 'मोहयाल मित्र का' थैला/बंडल आता है, पोस्टमास्टर से आज्ञा लेकर अपने सामने छंटवाई करवा सकता है, ऐसा करने से हमें आशा है कि सभी सदस्यों को ठीक समय पर 'मोहयाल मित्र' मिल सकेगा एवं पोस्टमैन को भी सहूलियत होगी।

उपरोक्त प्रक्रिया हाल ही में हमने एक–दो मोहयाल सभा से प्रयोग करके देखा है। जिसका परिणाम बहुत संतोषजनक रहा और उस क्षेत्र से हमें 'मोहयाल मित्र' न मिलने की अभी तक एक भी शिकायत नहीं मिली है।

आप भी कृपया ऐसा करके देखें।

 For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com